Research Paper IMPACT FACTOR VALUE : 5.983 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 11 | ISSUE : 6 | JUNE 2025

आद्य ऐतिहासिक पुरास्थल कालीबंगा: एक अध्ययन

भैरूं लाल कुम्हार [1]

[1] **सहायक प्रोफेसर (वीएसवाई) (इतिहास) सरकारी कॉलेज गुलाबपुरा (भीलवाड़ा) राजस्थान.**

ABSTRACT:

इतिहास में किसी भी संस्कृति का काल परिवर्तन होना एकाएकन होकर समय की क्रमिक परिवर्तनियता के अनुरुप होता चला आया है इसी क्रमिक परिवर्तन में आद्य ऐतिहासिक समय के दौरान जिसमें उस समय की संस्कृति या सभ्यता के बारे मे लिखित साक्ष्य तो उपलब्ध थे परन्तु उन्हे वर्तमान समय में पूरी तरह से प्रामाणिक तौर पर पढने में सफलता नही मिली जिसमें हमारी प्राचीन सिन्धुघाटी सभ्यता जिसे हम हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जानते है आती है तथा हमारी गौरवपूर्ण संस्कृति वैदिक सभ्यता को इस कालक्रम में रखा जा सकता है।

इसी कालखण्ड में हमारे देश की मरुधरा की कालीबंगा की सभ्यता एंव संस्कृति को रखा जाता है जो इसी सिन्धुघाटी व प्राचीन वैदिक सभ्यता एंव संस्कृति की समकालीन मानी जाती हैइसे समयकाल की स्थिति मे कांस्ययुगीन सभ्यता मानी जाती है ।

यह सभ्यता वर्तमान से लगभग 4000 वर्ष पूर्व की सभ्यता मानी जाती है, कालीबंगा से तीन महत्वपूर्ण सभ्यताओं के अवशेष पाये गये है जिनमे पूर्व हड़प्पाकालीन,हड़प्पाकालीन तथा उतर हड़प्पाकालीन सभ्यताऐं महत्वपूर्ण थी। इस पुरास्थल के उत्खनन से हड़प्पाकालीन सांस्कृतिक युग के पॉच स्तर पाये गये है इतना ही नही हमारे प्राचीन संस्कृत साहित्य में उल्लेखित बहुधान्यदायक क्षैत्र इसी स्थान पर मौजूद था इसलिये यह पुरास्थल अपने आप में एक महत्वपूर्ण आद्य ऐतिहासिक स्थल के रुप में विद्यमान है जिसके उत्खनन से निकली अनेक सामग्रियों से हम उस काल की सभ्यता एंव संस्कृति का अध्ययन अत्यन्त ही विवेकपूर्ण ढंग से कर सकते है ।

कालीबंगा पुरास्थल का महत्व इस बारे में देखा जा सकता है कि यहां से उत्खनित की गई पुरा सामग्री से सैन्धव या हड़प्पा लिपी की पहचान करने का प्रयास किया गया है कालीबंगा से प्राक हड़प्पा समय के दक्षिणी पूर्वी भाग में जुते हुऐखेत के साक्ष्य, जौ फसल की खेती के साक्ष्य, दुर्गीकरण एंव भूकम्प के साक्ष्य आदि हमें प्राक् हड़प्पा कालीन समय के साक्ष्य मिले है जो अति महत्वपूर्ण है इसलिये इसे दशरथ शर्मा ने इसे हड़प्पा सभ्यता की तीसरी राजधानी कहा था,कालीबंगा से एक साथ दो फसलों का प्राचीन साक्ष्य पाया गया है जिनमे चना एंव सरसो की फसले थी इसके अलावा यहां से जालीदार जुताई के साक्ष्य भी पाये गये है इसके अलावा कालीबंगा की महत्वपूर्ण विशेषता यह थी की यहां से किसी भी प्रकार की स्पष्ट जल निकास प्रणाली नही पायी गई अतः कालीबंगा पुरास्थल एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल माना जाता है।

KEYWORDS:

कांस्ययुगीन सभ्यता, बहुधान्यदायक क्षेत्र, मस्तिष्क शोध, दीन हीन बस्ती, खाद्यान, दोहरा परकोटा, जुता हुआ खेत।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
10th June 2025	11th June 2025

विषय प्रवेशः–

जिस प्रकार हम पुरातात्विक स्थल से अनेक प्रकार के ऐतिहासिक साक्ष्यों का उत्खनन करके उनका क्रमिक रुप से अध्ययन करके निष्कर्ष निकालते है तथा उसका कालक्रम निर्धारण, स्थिति,जनजीवन, प्राकृतिक दशा, जलवायु आदि का हम भलीभांति अध्ययन करते है उसी प्रकार कालीबंगा से प्राप्त विभिन्न पुरातात्विक सामग्रियों का निम्न प्रकार से अध्ययन करते है यह समझने का प्रयास करते है कालीबंगा की स्थिति, पुरातात्विक महत्व एंव वर्तमान मे इसकी उपयोगिता आदि का वर्णन करते है।

(1). कालीबंगा की प्राकृतिक अवस्थिति :– कालीबंगा स्थल देश के राजस्थान के हनुमानगढ जिले में प्राचीन सरस्वती या दृशती या घग्घर नदी के बांये तट पर अवस्थित है जो राजस्थान के उतरी क्षेत्र में मौजूद हैं यह वर्तमान से लगभग 4000 वर्ष पूर्व की संस्कृति मानी जाती है जो प्राचीन सैन्धव व वैदिक संस्कृति की समकालीन है कालक्रम के हिसाब से इसे आद्य इतिहास के अर्न्तगत रखा जाता है जो 3000ई.पू. से 600 ई.पू. निर्धारित किया गया है जिस समय का लिखित साक्ष्य तो हमें पूर्णतः उपलब्ध है। लेकिन उसे प्रामाणिक तौर पर पढने में किसी प्रकार की सफलता नही मिली है।

कालीबंगा पुरातात्विक स्थल से हमे इतिहास के प्राचीन तीन कालखण्ड या सभ्यता संस्कृति के साक्ष्य मिले है जिनमें हड़प्पा पूर्व, हड़प्पा व उतर हड़प्पा सभ्यता के अवशेष पाये गये है।

कालीबंगा से हमे हड़प्पाकालीन सांस्कृतिक युग के पांच स्तर भी मिले है जो ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण माने जाते है।

ऐतिहासिक रुप से हम देखे तो सम्पूर्ण सैन्धव सभ्यता में जल निकास प्रणाली की अति उतम प्रणाली मौजूद थी लेकिन कालीबंगा स्थल एकमात्र ऐसा पुरास्थल हे जो अपने आप में आद्य ऐतिहासिक संस्कृति की विभिन्न विशेषताऐं अपने में समेटे हुऐ स्थल के रुप में विद्यमान था।

कालीबंगा आद्य ऐतिहासिक स्थल अपने आकार की दृष्टि से देश में राखीगढी एंव गुजरात का धौलावीरा के बाद तीसरा सबसे बड़ा पुरातात्विक स्थल के रुप में विद्यमान है यह स्थल अपनी विविध विशेषताओं के कारण इसे सिन्धुघाटी सभ्यता की तीसरी राजधानी का दर्जा दिया गया है।

(2) आद्य ऐतिहासिक स्थल कालीबंगा का अध्ययनः– जिस काल खण्ड में हमे केवल ऐतिहासिक साक्ष्यों पर ही निर्भर रहकर अध्ययन करके उस संस्कृति का आंकलन करना हो तो हमें वहॉ से प्राप्त विभिन्न पुरातात्विक सामग्रियो का भलीभांती अवलोकन करना पड़ता है क्योकि उस काल में लिखित साक्ष्यो को पढने में किसी भी प्रकार की सफलता न के बराबर सिद्व हुई है। कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ काले रंग की चुड़ियॉ होता है।

कालीबंगा से प्राक् हड़प्पा काल का जुता हुआ खेत का भी साक्ष्य पाया गया है तथा यहॉ पर 1961–1969 के दौरान नो सत्रो मे एम. डी. खरे जे.वी. जोशी,बी. बी. लाल (ब्रज वाशी लाल) तथा बी. के थापर के निर्देशन में उत्खनन किया गया है, कालीबंगा को स्वतन्त्र भारत का दुसरा पुरातात्विक स्थल के रुप मे भी माना जाता है जिसका उत्खनन देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद किया गया , यहॉ से जालीदार जुताई के साक्ष्यो के साथ साथ एक साथ दो फसलो के साक्ष्य पाये गये जिनमें चना सरसों मुख्य है।

कालीबंगा से हमें एक दुर्ग, लकडी की नाली, बेलनाकार मुहर, फर्श में अलंकृत ईटों का प्रयोग, तांबें से बना बैल का खिलौना, स्वास्तिक का चिन्ह, ऊॅट की हड्डियां, पैर से चलने वाली चक्की, बेलनाकार तंदूर, गोल आकार में बने कुॅऐं के साक्ष्य, नालियो तथा मकानो व

धनी वर्ग के लोगो के आवास गृहो के अवशेष मिले है।

कालीबंगा से नाली के साक्ष्य तो मिले लेकिन किसी सार्वजनिक नालियो के अवशेष नही मिले है,इसके अलावा यहॉसे 7 आयताकार हवन कुण्ड पाये गये है जिससे आश्य लोग किसी प्रकार की धार्मिक क्रियाऐं जैसे यज्ञ , हवन आदि क्रियाऐं करते होंगे मिली है, यहॉ से प्राप्त बेलनाकार मुहर जो समकालीन मेसोपोटामिया सभ्यता में प्रचलित थी भी मिली है, यहॉ से एक युग्ल समाधि तथा प्रतीकात्मक समाधि के साक्ष्य भी मिले है,माना जाता है कि हड़प्पा, मोहनजोदड़ो व कालीबंगा में एक समान नगर येाजना पायी गई है परन्तु मोहनजोदड़ो के विपरित कालीबंगा के घर कच्ची ईटों के बनाये गये थे इसी कारण इसे दीन–हीनबस्ती कहा गया हैं इसके अलावा यहॉ पर अपवादस्वरुप पक्की सड़क मिली है। यहॉ के लोगो में तीन प्रकार के शवों के अनत्येष्टि के साक्ष्य पाये गये है।

(3). कालीबगां का जनजीवन :– सदियों पूर्व जनजीवन किसी भी संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है तथा लोगों का रहन सहन, धर्म, समाज आदि इसे परिपूर्ण बनाने में सहयोग करते है, कालीबगां के लोगों के दुर्ग एंव नगर क्षेत्र दोनो अलग अलग रक्षा प्राचीरो सेघिरे हुऐ थे जो किसी अन्य हड़प्पा नगर में निचला नगर रक्षा प्राचीर से नही घिरा मिला है।

कालीबंगा से मिटटी की बनी काले रंग की चुड़ियॉ बहुतायत में मिली होने के कारण इसे कालीबंगा स्थल के नाम से जाना जाता है, यहॉ से मातृदेवी की कोई मूर्ति नही मिली है इसका आश्य है कि ये लोग मातृदेवी की पूजा उपासना से अनभिज्ञ थे, कालीबंगा में दुर्ग का द्विविभागिकरण सिर्फ यहीं से मिला है जिसमे दुर्ग के एक ओर जनसंख्या का विशिष्ट वर्ग निवास करता था तथा दूसरी ओर हवन कुण्डो के साक्ष्य तथा पश्चिम में कब्रिस्तान के साक्ष्य मिले है।

कालीबंगा के लोग शवो की अंत्योष्टि तीन प्रकार से करते थे जिनमे पूर्ण समाधिकरण, आंशिक समाधिकरण व दाह संस्कार के प्रमाण मिले है।

(4) कालीबंगाकालीन अर्थव्यवस्था :– आद्य ऐतिहासिक पुरास्थल कालीबंगा से मिले साक्ष्यों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि लोगो की आजिविका का मुख्य साधन कृषि ही रही होगी क्योंकि यहॉ से किसी अन्य प्रकार की आर्थिक गतिविधियो की जानकारी नही मिली है यहॉ से एक साथ दो फसलों केउगाये जाने (सरसो व चना)का साक्ष्य मिले है । इसके अलावा चावल के साक्ष्य भी मिले है तथा हल से जुते खेत के साक्ष्य यह इगिंत करते है किवे लोग कृषि में जमीन को हल से अच्छी तरह से जोतकर फिर फसलो की बुवाई करते थे इसके अलावा यहॉ से बैलनाकार मुहर भी पायी गई जो मसौपोटामियां में प्रचलित थी अर्थात उन्हे लेन देन की भी जानकारी थी तथा व्यापार में मुहरों का प्रयोग करते होंगे इसके अलावा यहॉ से उॅट की अस्थियां भी मिली अर्थात वे लोग ऊॅट जैसे जानवर को भी पालते थै तथ उन्हे कृषि या अन्य उपयोग हेतु प्रयोग करते थे ।

कालीबंगा पुरास्थल से खेापड़ी की शल्यचिकित्सा के प्रमाण मिले है उसका तात्पर्य है किवे लोग स्वास्थ्य के प्रति सतर्क थे तथा उन्हे शल्य क्रिया की जानकारी थी इसके अलावा हाथीदांत की कंघी के प्रमाण भी मिले हे अर्थात वे लोग कला में दक्ष थे तथा हाथी उस समय अस्तित्व में रहा होगा ।

(5) कालीबंगा सभ्यता के लोगो की कला :– कला व कौशल प्राचीनकाल से ही मनुष्य जीवन का एक अभिन्न अंग रहा है जिसके आधार पर मानव अपने जीवन को समुन्नत तरिके से यापन करते है उसी प्रकार कालीबंगा संस्कृति के लोग आवास हेतु मिटटी की ईंटे बनाकर उन्हे धूप मे सुखने के बाद अपने आवास गृहो का निर्माण करते थे इसके अलावा कालीबंगा से गुलाबी मृदभाण्ड़ पाये गये है जो प्राक हड़प्पाकालीन है इन्हे सोंथी मृदभाण्ड़ भी कहा गया क्योकि यह मृदभाण्ड़ सर्वप्रथम राजस्थान के सोंथी क्षेत्र (बीकानेर जिला) से प्राप्त हुऐ हे यहॉ से प्राप्त अन्य प्रकार के मृदभाण्ड़ जिनमे लाल रंग प्रयुक्त हुआ है तथा उन पर काले व सफेद रंग की रेखाऐ खिंची गई है तथा इनको सुन्दर रुप में फूल पतियों से अलकृंत किया गया है।

कालीबंगा से मिली मिटटी की बनी वृषभाकृति(बैल)जो कला कौशल की दृष्टि से अति महत्वपुर्ण रुप से उल्लेखनीय है इस वृषभ मे उसका सिर का कौशल अति कलात्मक हैं। इसके अलावा यहॉ से आठ अग्निवेदियां जिनमे सात अग्निवेदियां एक चबूतरे से तथा एक अलग चबूतरे पर निर्मित की गई है मिली है इसके अलावा यहां से दोहरे परकोटे का प्रमाण मिला है जो हमें उन लोगो की कला व तकनीक का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है इसके अलावा यहॉ से पैर से चलने वाली चक्की, एक पल्ले वाला दरवाजा, हाथीदॉत की बनी कघी, मृण– पटिका पर सींगयुक्त देवता की आकृति का अंकन, अनेक घरो में बने हुऐ कुऐं, फर्श में अलंकृत ईटों का प्रयोग, ईंटो से निर्मित चबूतरे, तांबे की आक्रामक मुद्रा में बनी वृषभ आकृति, सिलवटा, आयताकार हवन कुण्ड़ आदि के साक्ष्य हमें कालीबंगा के लोगो की कला व उन्नत तकनीक का उदाहरण प्रस्तुत करते है।

कालीबंगा संस्कृति की विशेषताऐं:–

1. कालीबंगा के लोगो को एक साथ दो फसलो में उत्पादन की जानकारी होना अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है यह उनके मस्तिष्क की पराकाष्ट का द्योतक है।
2. यहॉ से विश्व का पहला जुता हुआ खेत का साक्ष्य मिला है।
3. यहॉ से मिटटी के बर्तनो के साक्ष्य मिले जो बाद के हड़प्पावासियो के बर्तनो से अलग थे ।
4. यहॉ से टेराकोटा से बना आक्रमणकारी मुद्रा में बैल का साक्ष्य अपने आप मे अद्वितीय है।
5. कालीबंगा से मिले अग्निवेदिकाऐ एंव श्वाधानो के विधियो की जानकारी
6. यहॉ के घर मिटटी की ईटों से बने कच्चे घर तथा ईटे नालियॉ, कुॅओ तथा सिल तक ही सिमित थी ।
7. यहॉ से बैल व अन्य पालतू पशुओ की मूर्तियॉ व बारहसिंघा की अस्थियो के साक्ष्य मिलना ।
8. बैल गाड़ी के खिलोने तथा हल से अंकित रेखाऐं मिली है।

कालीबंगा की वर्तमान उपयोगिता :–

यह सभ्यता जो सैन्धव सभ्यता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थी आज अपने महत्व के कारण प्राचीन भारतीय सभ्यता, संस्कृति व जीवनशैली को समझने में अति महत्वपूर्ण है तथा शोध ओर पर्यटन के लिये एक महत्वपूर्ण स्थान है।

1. कृषि व शहरी नियोजन का प्रमाण :– यहॉ से प्राप्त अवशेष , नगर नियोजन के प्रमाण जुते हुऐ खेत आदि सिन्धुघाटी संस्कृति के लोगो के कृषि व शहरी जीवन के बारे में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक जानकारी प्रदान करते है ।
2. धार्मिक व सामाजिक जीवन के बारे में अध्ययनः– कालीबंगा में अग्नि वेदिकाओं के प्रमाण और अन्य धार्मिक क्रियाओ के अवशेष ।
3. मानवीय जीवन का अध्ययन :– कालीबंगा से प्राप्त विभिन्न साक्ष्य जैसे मुहरे मिटटी के बर्तन, तांबें के ओजार तथा अन्य विभिन्न कलाकृतियॉ हमें सैन्धव सभ्यता के जीवन, संस्कृति तथा प्रोद्योगिकी के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देते है।
4. शोध व पर्यटनः– यह पुरास्थल एक आद्य ऐतिहासिक स्थल होने के कारण शोधकर्ताओ व पर्यटको के लिये आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।
5. विश्व धरोहर स्थल के प्रयासः– इस ऐतिहासिक स्थल को विश्व धरोहर के रुप मे नामित करने के लिये काफी प्रयास किये जा रहे है।

कालीबंगा सभ्यता का निष्कर्ष :–

कालीबंगा को अपने विस्तार, नगर नियोजन व अन्य महत्वपूर्ण क्रियाओ के कारण इसे सिन्धु घाटी सभ्यता की प्रांतीय राजधानी के रुप में माना जाता है।

यहॉ सिन्धु घाटी सभ्यता से पूर्व हड़प्पा और हड़प्पा दोनो संस्कृतियो के साक्ष्य पाये गये है।

यहॉ से मिटटी के बर्तनो और मुहरो पर लिपी के पर्याप्त मात्रा में साक्ष्य पाये गये ।

REFERENCES

1. रामशरण शर्मा – प्राचीन भारत का इतिहास
2. एस. एल. अग्रवाल – राजस्थान का इतिहास
3. Ncert-class 11th प्राचीन भारत
4. Rbse books 10th राजस्थान का इतिहास एंव संस्कृति